

DPN 6533

Title :

सूय्य शान्ति स्तव SŪYYA ŚĀNTI STAVA

Run. No. 7258

Cat. No. 221

Micro. No.

Subject स्तोत्र Hymn

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt.- New. / Maith.- New. / New.- Nep. /

Size in cms. 16 x 5.3

Folios 10
(59-69)

Lines (in a page) 5

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Material : palmleaf / paper / thyasaphu /

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

△ ॐ नमः श्री शीतला देव्यै ॥ ॐ अस्य श्री शीतला देव्या स्तोत्र मन्त्रस्य वामदेव गृह्यः
P. T. O.

इति स्कन्द पुराणे शीतला देव्या स्तोत्रं समाप्तं ॥

इति श्री शीतला स्तोत्रं समाप्तं ॥

इति श्री स्कन्द पुराणे शीतला देव्या स्तोत्रं समाप्तं ॥

इति शिवोक्ते महातन्त्रे सूर्यावतारे सूर्य शान्ति स्तवः समाप्तः ॥ ॥ शुभ
मङ्गलं भवतु ॥ शुभः ॥

ॐ नमः श्री गणेशाय ॥ ॐ नमः श्री गणेशाय ॥ ॐ नमः श्री गणेशाय ॥
वामदेव कृष्णाय नमः ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ श्री गणेशाय नमः ॥
मन्त्रः ॐ कीलकं श्री गणेशाय नमः ॥ ॐ नमः श्री गणेशाय ॥
मूलमाद्योय ० न ॥ ॥ नमः नमः नमः ॥ ॐ नमः श्री गणेशाय ॥
गणेशाय नमः ॥ ॐ नमः श्री गणेशाय ॥ ॐ नमः श्री गणेशाय ॥

शा
भा॥

हुनमस्तु कां॥ नमामि गान सांदवा विस्तुट करुयायदां॥ हुनायस्मा
नकुष्ठादि सुलनागतिवाविदां॥ कर्तुं मूलं बूक कंष कटि सन्धिः
पूर्वे गच्छा विस्तुट करुयं इ४ खं गान लं म निवानय॥ गान लं सर्वना
गद्यु सर्व इ४ ख विनामिनि। सर्व विस्तुट का न्द वि। कुहि मां गान लं ग
नं॥ वागिकायेरु का चैव। मृषिका सानियानिका४। इनाद व विः

शर

१

नम्यंति गान लं त्वत्य साद न४॥ अदि कु कि मि न४ मूल विनामिनीः
सुगान लं मदा विस्तुट का लोटा कुहि मां गान लं सदा॥ नकादि कंदा
हिक क्क गुयाहिक मदा काना४। च। दुर्थिकायदि का म्भ मा सि व द मा हि
का म्भ यं॥ अन् न र्ज ना म्भ न ग द वा क्क ना या म्भ दानू ह ४ गान लं स न द
द व न म्भ य नि विस्तुट का कना४॥ य४ य १० नू गान लं स न ग्गु नि कालं

श्री
म॥

संयतन्द्रियः। गन्धदग्निमणिं ह। नार्गं विस्फोटकादयः॥ नृक्षारुच
भगं ऊर्कं ऊलं यस्मै यदीयतां गन्धदग्निमणिं विस्फोटकराय
दयः॥ यः यः १० गंगा गलाक्षार्णं निमित्तमिदं दत्तं स्वर्गात् सायामु
दिनं गन्धदग्निमणिं कुरु॥ ॥ ॐ गिष्कन्दयूना हामा गलादयः
स्तुतं प्रसादः॥ ॥ ॐ नमः॥ गलाय॥ दविदविमहादवि

२

दहिनां सुखदायिनि। सर्वत्रागद्वारा वा वंशात् गलात् नमाम्यहं॥ तु
षात्रनिर्मला रासद्वयान् नमाम्यहं॥ सर्वत्रागद्वारा वा वंशात् गलात्
नमाम्यहं॥ नीलकण्ठस्य दवस्य कालकूटद्वारा वा वंशात्
नमाम्यहं॥ विष्णोरा वंशात् गलात् नमाम्यहं॥ पूगमन्त्रावसंवा
धस्य गिष्कान् नमाम्यहं॥ सर्वत्रागद्वारा वा वंशात्

शा
गा॥

गागलं त्वानं मा म्यहं ॥ सन्निधानादिदाहस्य निदायक न गालिर्न ॥ स
र्वनागक नाराव गागलं त्वानं मा म्यहं ॥ विषदाय भनी न स्यात्वाधिदाय
स्य दहि न ॥ सर्वनागक नाराव गागलं त्वानं मा म्यहं ॥ दिव्या मृत
मया क्षयं सर्वं मिताय हानि हिर सर्वनागक नाराव गागलं त्वानं मा
म्यहं ॥ रुको नां मनसा इयिना मृत गवहं सर्वं हि दायाय हं श्री कृष्णः

अगमं मृतं श्वनिमदात्वा लाकन कामि वं ॥ अद्या पूर्वक मानसा मृत
गिनाह सा ॥ अलि मृदया ॥ अस्या निश्वसनि निदिगं रगव गीत्य छादु रा ॥
नम ॥ ॐ गी श्री गागला सा ॥ समायं ॥ ४ ॥ ॥ ॐ नम ॥ ४ ॥ गाग
लाये ॥ अह उवाच ॥ रुगवन्दं वद वम गागलाया सुर्वं शु रं वकु म
हं स्य ॥ भवत विह्वल करुयाय हं ॥ ॐ श्वन उवाच ॥ अहं गागला

द'वी'नासरुस्कादिगन्धनां। माऊनी कलभाय'तां सु'यीसिं'क'ग'
 मस्तकां॥ वन्दे'हं'गी'ग'ल'दि'वी' सर्व'ना'ग'र'या'प'ह'र'या'मा'सा'अ'नि
 व'रु'ग'वि'स्फ'ट'क'र'य'म'ह'ना॥ ग'ग'ल'ग'ग'ल'अ'नि'या'व'या'दा'ह'वा'
 लि'ग'४'वि'स्फ'ट'क'र'वा'दा'ह'४'क्रि'य'ग'स्य'प'ह'अ'नि॥ य'स्वा'म'य'क'
 म'अ'ध'उ'ध'अ'स्वा'सं'य'ऊ'य'त'न'४'वि'स्फ'ट'क'र'य'ध'ार्'न'ग'ह'ग'स्य'न'

जायते॥ ग'ग'ल'क'न'द'अ'स्य'य'लि'ग'अ'अ'ग'ग'स्य'च'य'ह'र'क'च'क'ष'
 ४'य'स'स्वा'मा'ऊ'जी'व'नी'ष'ध'॥ ग'ग'ल'ग'न'ऊ'जा'ग'ग'न'ह'र'अ'सि'इ'
 ह'य'ऊ'रि'वि'स्फ'ट'क'वि'ग'ध'र्'नां'त्व'म'का'म'ग'व'धि'दी॥ ग'ग'ल'ग'ध'र'
 ग'ह'रा'ग'ग'य'वा'न'य'दा'न'ह'म'न'ह'म'। त्व'द'न'ध'अ'न'मा'ग'ह'। ग'ग'ल'ग'या'
 कि'सं'क्ष'य'॥ न'म'क'न'नी'ष'ध'कि'श्चि'स्वा'य'ना'ग'स्य'वि'द्य'म'। त्व'म'का'ग'

शा
ना॥

नलं गुणीनाम्यां यस्यामिदं वगां॥ मृदुलमनन सह गां नारि हृत्तमध
संस्ति गां यस्यायू ऊयनं दवी नस्यम यूनै रीयनं॥ मृदुलं कं गीन
लादे व्याय ४ य १० सागव ४ सदा॥ विस्फोटक रुयं धानं कुनस्यय
जायनं॥ (गुणनयं पठि नयं भूयं द्वा र कि समन्विने ४ विस्फोटकः
विनामय कनं स्वस्ययनं मरुत् ॥ गीनलाय क मवदं नदयं यस्य कः

३३

५

राचित्। दागयं तु सदागमो रुकि शुद्धाचिताहिय ४॥ ॥ ॐ मिश्राः
स्केन्दयना (सगाग लादे व्याक्ता गुं समाक ४॥ गीगागलाय नम ४॥ गुरु
उ नम ४॥ गीगागलाय नम ४॥ गीगागलाय नम ४॥ गीगागलाय नम ४॥
रुवां रुगवान् (गुरु मिश्रा मि क धं द्वा दम मूरुय ४॥ १ ॥ ॐ गीगागलाय
चा॥ गीगागलाय नम ४॥ गीगागलाय नम ४॥ गीगागलाय नम ४॥ गीगागलाय नम ४॥

श्री
म॥

गुरुद्विषाषम॥ २ ॥ सर्वभक्तिकवलेव सर्वार्थयुगिसाधनं स
र्वयोगयुगमनं सर्वविद्यविनाशनं ॥ ३ ॥ नृकासोवक्रुक्षरुचाकाटि
रुदविनिर्गत॥ मासमासगयनकाद्वादगमावयव्यनं ॥ ४ ॥ मिता
मार्जनमासयोषविषु ४ सनातन॥ वनू (हममाद्यमासगु सृष्टीवैरुक्तु
हामन॥ ५ ॥ वनू मासोसगतकलानू वैभारवतायनस्मृ न॥ ६ ॥ मास

३

तफविन्दुनाषाटगयनवि॥ ७ ॥ गरुक्षि४ अवहमासयमासदय
दगथादिनव्यनमावाग्निम्यां कार्त्तिकचदिवाकन॥ ८ ॥ वृत्त्यनंदा
दभादिश्यामासमासयकीर्त्तिना ३ ग्रन्थामरुगनं जायुगमनानलव
वसा ॥ ९ ॥ ॐ नमस्तुस्तु सह सा (भा आदिश्यायनमानम॥ नम
४ यचक्षुनूयाय गुरुभायनमानम॥ ५ ॥ नमस्तुयद्यरुसायन

श्री
सू॥

नूष्णाय नमः ॥ नमः ॥ दिनध्यर्हाय सास्त्राय नमः ॥ १० ॥
 नमः ॥ अग्निगर्हाय युषाय नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥
 नमः ॥ नमः ॥ ११ ॥ नमः ॥ मित्रनामय सूर्यायैव नमः ॥
 नमः ॥ सूर्यायैव नमः ॥ १२ ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥
 नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥

३३

सर्वरूपं सर्वरूपं नृपतिं किं किं नृपतिं किं किं
 सर्वदेवं देवस्मिन् ॥ १४ ॥ आदि श्यासास्त्राय नमः ॥
 दिवाकन ॥ १५ ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥
 नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥
 सिन्दूरान्नविगुह ॥ १६ ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥

10

5

0

cmts.

5

10

15

20

229 स्तोत्र संग्रह

पा
स॥

ॐ